KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/OCT-DEC2017/VOL-4/ISS-4/A8 PAGE NO.28-29
ISSN: 2348-4349 IMPACT FACTOR (2017) – 7.9183
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

फिरोजाबाद नगर आन्तरिक संरचना, गृह स्थिति एंव नगरीय वातावरण का भौगोलिक अध्ययन

[1]Dr.KAMESH KUMAR
[1]H.O.D. Dept. of Geography, Cap. Ram Singh Degree College, Firozabad

फिरोजाबाद नगर केन्द्र का उद्भव :-

फिरोजाबाद नगर केन्द्र का उद्भव अकबर के शासन काल में माना जाता था। अकबर द्धारा इसकी स्थापना के पूर्व फिरोजाबाद सरकारी कागजातों में चन्द्रवार मौजा फिरोजाबाद लिखा जाता था। चन्द्रवार के ऐतिहासिक अतीत में समाहित होने के पश्चात फिरोजाबाद का उद्भव हुआ जनश्रुतियो के अनुसार १४८६ ई० में राजा टोडरमल गया की यात्रा से लौटते समय वर्तमान फिरोजाबाद नगर केन्द्र के दक्षिण पूर्व में स्थित आसफाबाद गॉव में रूके थे, किन्तु वहॉ के लोगों ने उनके साथ दुर्व्यहार किया। अकबर को जब इस घटना का समाचार मिला तो उसने फिरोज ख्वाजा नामक मुगल अधिकारी को आसफाबाद नगर को नष्ट-भ्रष्ट करन तथा नया नगर बसाने का फरमान जारी किया इस प्रकार १५ वीं सदी के उत्तरार्द्ध में फिरोजाबाद नामक नगर केन्द्र का उद्भव हुआ इसके संस्थापक फिरोज ख्वाजा के नाम के अनुसार हुआ। आज भी फिरोज ख्वाजा का सफेद संगमरमर का मकबरा आगरा रोड के किनारे नगरपालिका भवन के सामने मौजूद है। फिरोजाबाद की स्थापना समय से लेकर आज तक फिरोजाबाद अपने प्राचीन स्थल पर ही अधिवासित एवं विकासमान रहा है।

जैसा कि पूर्वतः उल्लखित है प्रारम्भ काल में फिरोजाबाद का विकास अत्यन्त सीमित रहा तथा इसके निकटवर्ती क्षैत्र चन्द्रवार चौहानो एवं रापरी के विभिन्न शासको के अर्न्तगत रहा। चन्द्रवार नामक स्थान पर स्थित किला ,मंन्दिर, मस्जिद तथा भवनों के वंसावशेष, अनेकों पुरातात्विक महत्व के बर्तन मूर्त्तियां, खिलोना, स्तम्भ आदि तत्कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के वाहक ऐतिहासिक प्रमाण है। मुगल शासन काल में इस क्षेत्र पर जाट शासको का आधिपत्य था जिनकी राजधानी भरतपुर थी। जाट महाप्रतापी राजा सूरजमल ।१७०७-१७६३। तथा उनके वीर पुत्र जवाहर सिहं ।१७६३-१७६८। ने भी इस क्षेत्र पर शासन किया , जो आगरा के किले से इस सम्पूर्ण क्षेत्र का शासन संचालित करते थे और इस मध्य जाट अधिवास उनके भू-स्वामियों, प्रमुखों के रूप में छोटी-छोटी गढी के रूप में फिरोजाबादके रूप में चारो ओर विकसित हुये ।१७५० तक का यह खंदौली के अर्न्तगत रहा, किन्तु १७५०में फिरोजाबाद परगना मुख्यालय बनाया गया। १८०३ ई० में फिरोजाबाद को तहसील मुख्यालय बनायाा गया, जिसका नगर केन्द्र के रूप में वास्तविक विकास प्रारम्भ हुआ।

नगरीयकरण प्रायः एक ऐसी प्रक्रिया है, जो साधारणतया एक ग्राम से प्रारम्भ होकर एक वृहद नगर केन्द्र तक विकसित होती है। नगर के नाम का सर्वप्रथम उल्लेख १५८० में अलबदायूँ द्धारा लिखित पुस्तक मुन्तखबात में मिलता है। चूँकि फिरोज ख्वाजा के द्धारा आसफाबाद को ध्वस्त कर दिया गया था। अतः वहॉ के निवासी तत्कालीन फिरोजाबाद नामक नगर में निर्वासित हुए। दूसरी ओर चन्दवार नामक ऐतिहासिक स्थल भी जीर्ण-शीर्ण हो चुका था जिसके चारों ओर विकसित अधिवासीय व्यवस्था इस नगर के प्रारम्भिक विकास का मूल कारण बनी । दूसरी ओर यमुना की बाढ से पूर्ण सुरक्षित स्थल था। मुगलकाल में राजा हिम्मत बहादुर गुसाई नामक मनसवदार ने भी फिरोजाबाद में फतेहाबाद मार्ग पर एक वृहद भवन का निर्माण कराया, जिससे इसके चारो ओर नगर का विकास होने लगा । सन् १६६५ ई० में फ्रेच यात्री ट्रैबनेयर ने फिरोजाबाद का उल्लेख एक छोटे से नगर के रूप में किया गया । यद्यपि इस काल तक फिरोजाबाद के उद्भव को १०० बर्ष हो चुके थे। दूसरी ओर मराठाओं के आधिपत्य के समय भी इस नगर का विकास हुआ। समय-समय पर यहॉ अनेको मन्दिर,मस्जिदों का निमार्ण हुआ यहॉ की पुरातन मस्जिद को पठानों ने बनबाया था। यहॉ महादेव, कृष्ण, राम, राधामोहन के पुराने मंदिर है। जैनियों का सुप्रसिद्ध मन्दिर भी नगर केन्द्र के मध्य स्थित है। इस प्रकार पुरातन किले, मस्जिद, मन्दिर आदि के साथ ही नगर विकास १८ वीं सदी तक अनियोजित से होता रहा है।सन् १८०३ ई० में फिरोजाबाद तहसील मुख्यालय बन जाने से

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

अनेक प्रशासनिक वाणिज्यक एवम् प्रशासकीय कार्यालय खेले गये। जिससे यहॉ वाणिज्यक व्यवस्था , मनोरंजन शिक्षा के आवागमन के साधन और नागरिक सुविधाओ का विकास होने लगा।

अपने उद्भव १५ वीं सदी के अन्त से लेकर १६ वीं सदी के प्रारम्भ तक

फिरोजाबाद नगर विकास आगरा-शिकोहाबाद मार्ग तथा फतेहाबाद मार्ग जो आगरा शिकोहाबाद मार्ग से समकोण पर मिलता है। मुगल काल में कुछ खुले क्षेत्रों को छोडकर नगर की सभी कृषि भूमि पर अधिवास विकसित हो चुके थे। अधिकाशं भवन मिट्टी के बने थे। तथा परिनगर बस्ती के आवास एक दूसरे से सम्प्रक्त एवं सकरे थे। वाताबरण अस्वस्थप्रद तथा संवातन का अभव था।

स्वातन्त्रेतर काल :- वर्तमान सदी में विषेश रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त अनेको नियोजित एवं उननत आवासीय बस्तीयों का निर्माण हुआ , इनमें अध्काश बस्तीययया। नगर के उत्तर पश्चिम की ओर विसित हुयी में गणेशनगर , गॉधी नगर, गालिब नगर , दुर्गा नगर, हरी नगर, आर्य नगर, श्री नगर, विभव नगर, महावीर नगर , सुहाग नगर,आदि उल्लेखनीय है। लेकिन कालोनियो के मध्य में कॉच के कारखाने नगरीयय वातावरण को प्रदूषित करते है। आगरा रोड पर ही पूरब में कोई महत्वपूण कालोनी विकसित नहीं हुयी फिरोजाबाद के दक्षिण में रेलवे स्टेशन के निकट मुरली नगर, आजाद नगर, राम नगर, श्याम नगर, सन्त नगर, ओम नगर आदि नव विकसित कालोनिया भी स्थापित हुयी है। दूसरी तरफ ओर अत्यधिक घनी आबादी तथा यातायात के घनत्व वृद्धि के परिणाम स्वरूप आसफाबाद थाना रामगढ होते हुये जिला जज व पौलिटेक्निक के से होते हुये राजा के ताल तक एक बाईपास का निर्माण हआ यद्यपि सम्पूर्ण बाईपास वृहद रूप से खुले क्षैत्र से होकर गुजरता हैं। किन्तु विगत दिवस में बाईपास के पास के निकट अथवा दोनों ओर कुशवाह नगर, द्धारिकापुरी , दयाल नगर भारत नगर, गोपाल नगर आदि कालोनियां निर्माणधीन है। फिरोजाबाद नगर से लगभग ५ किलो मीटर दूर डबरई नामक स्थान पर फिरोजाबाद जनपद के जिला मुख्यालय का पूर्ण नियोजित एवं भव्य विकास हुआ है। जिससे धीरे-धीरे इस निर्मित जिला मुख्यालय के आस-पास भी इस और नगर के विकास की सम्भावनाये प्रवल हुयी है। साथ ही इस नगर की जनसख्या बृद्धि भी इस नगर की अभिवृद्धि की द्योतक है। जिसे यथासम्भव तालिका द्धारा प्रदर्शित किया है।

तालिका

फिरोजाबाद नगर की जनसख्या वृद्धि ,१९०१-२००१

वर्ष	नगरीय जनसख्या	जनसंख्या का अन्तर	दशकीय वृद्धि प्रतिशत में
1901	16849	--	--
1911	13571	-3278	-19.5
1921	20183	6612	48.7
1931	23154	2971	14.7
1941	40572	17418	75.2
1951	65438	24866	61.3
1961	98611	33173	50.7
1971	133863	35252	35.87
1981	262898	69035	51.6
1991	261584	58684	28.92
2001	279102	17518	6.73

जिसके द्धारा फिरोजाबाद नगर की दशकीय बृद्धि दर्शायी गयी है।

Ref.

- Neave, E.R. : Mainpuri – A Gazetteer, P – 146Puri, :op, cit. P.-51 Majumdar and Pusalker, op, cit., vol. II 121,153
- Tripathi, R.S. : History of Kannauj to the Moslem Conquest,p-186
- Rizvi S.A.A. : Mughal kalin Bharat, hindi text ,trans, babarnama, (Aligarh, 1960), p.- 203-209

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org